Bhagauti Persad Sen

Bhagautipersad. M. Sen

City Magistete court Karach

31-9-30

24

2019.01.28 12:

॥ श्रीः ॥

घरूकाक्षत्रियवंशावली

जिसको

श्रीमान् विद्यावारिधि

पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रजी ने

धर्मशास्त्र महाभारत आदि अनेक ग्रन्थों

के आधारसे संकलन किया.

उसेही

श्रीयुत बाबूरघुवीरशरणसेनजी

हेडएकौण्टेण्ट सर्वेआफिस

हज़ारीबाग़ ने

जातिभाइयोंके हितार्थ

"लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय

मुरादाबादमें

छपाकर प्रकाशित किया.

सन् १९११

प्रथमवार १००० } { कीमत ।।)

Printer-Lakshmi Narayan

Lakshmi Narayan Press,

MORADABAD.



पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र

श्रीगणेशाय नमः ॥

धन्यवाद

धन्य है उस परब्रह्म परमेश्वरको कि जिसने अपनी मायासे इस संसारको अनेक प्रकार के जीवों तथा भिन्न भिन्न अमूल्य पदार्थों से रचनाकर मानसी सृष्टिमें अपना तेज प्रकाशित किया, कि जिससे प्रत्येक छोटे बड़ेको अपने कर्मानुसार फल समझने और अपनी भुक्ति मुक्तिकी राह सूझ पड़ने की सामर्थ्य हुई, और परमकल्याण प्राप्त वा भवसागर पार उतरने को संसारी जीवोंके अनेक धर्म्ममार्ग प्रकट करके ऐसे ऐसे ज्ञानरूपी सेतु वेद शास्त्र पुराण आदि सहज वा उत्तम बनाये, कि जिनके अनुसार थोड़ी मेहनत और भक्ति उस परमात्मा की होनेसे यह जीव मायारूपी भँवरसे छूटकर परम पदको पहुँचजावै। मैं सर्वदा घरूका जातिकी वंशावली अर्थात् सुधार की खोजमें रहा क्योंकि मुझे बूढ़े लोगोंसे यह बात मालूम होती रही, कि हमलोग घरूका राना हैं, केवल छोटे कर्म करनेहीसे नीच जातिमें गिनेजाते हैं, और हमलोग महाबली भीमसेनके वंशजहैं। यद्यपि आजकलके घरूकावंशी बहुत कम पढ़ेलिखे हैं तथापि हरएक वंशके मुखसे यह बात निकलती है कि "सात ताड़ भीम परिमाना, चौदह ताड़ घरूका राना" तथा हमलोग पाण्डववंशी हैं, घरूका भाइयों की ऐसी बातें सुनकर मैं अपने मनमें सोचता विचारता रहा। कि इन बातों में से कुछ जरूर सत्य है और मेरा ज्येष्ठपुत्र बाबू चन्द्रपालसेनभी समझदार होतेही इसी खोजमें बड़ी चिन्ता करनेलगा दो० "-रघु बोई कीर्तीलता, चन्द्रकीन्ह द्वै पात। सींचा ललतासेनने, जब देखा कुम्हलात ॥" होते होते दैवयोग वा हमारे सौभाग्यसे सन् १६०९ ई० के जनवरी मासमें जगविख्यात श्रीमान् १०८ श्रीपण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्रजी विद्यावारिधि मुरादाबादनिवासी मुझको मिलगये और उनसे मैंने अपना अभिप्राय प्रकट करके घरूकावंशको स्पष्टरूपसे प्रकाश करनेकी प्रार्थना

की, उक्त पण्डितजी महाराज कृपासिन्धुने मेरी प्रार्थना स्वीकार की और पुराण इत्यादि ग्रन्थोंको बड़े परिश्रमसे अवलोकन करके घरूका क्षत्रियजातिकी वंशावली तैयार करके मेरी मनोकामना पूर्ण करादी चौ०--"देखे ग्रन्थ सभी चितलाई। चुन चुन वंशावली बनाई"॥ अब मैं उक्त पण्डितजीके चरण कमलों को बारम्बार प्रणाम करता हूँ जिनके परम परिश्रमसे उस पदकी प्राप्ति हुई जिसकी आशा स्वप्नमें भी लेशमात्र न थी, चौ०-"जहँ जहँ दीन रहे दुखपाए तहँ तहँ कृष्ण आप चलिआए॥ परमात्माने पण्डितजीको घरूका वंश तथा सनातनधर्म्मकी सभी बातोंकी पुष्टि करनेको उत्पन्न किया है, हम उक्त पण्डितजीसे किसीप्रकारसे उऋण नहीं होसक्ते चौ०-"नहिं धनवान नहीं हम राजा। किमि हम तृप्त करैं महराजा॥ पान फूलसे उऋण करीजे। भारत माहिं सुयश गहि लीजे॥" जैसा परिश्रम वा कष्ट पण्डितजीने हम लोगों के लिये उठाया है उसका वर्णन करना बड़ा कठिन कार्य है। अबमैं अपने सभी घरूकाक्षत्रिय भाइयोंपर सविनय प्रकाश करता हूँ जिन बातोंको मैं बूढ़े लोगों से सुनता आया सो सब बातैं आज मुझको आनन्दकन्द श्रीकृष्ण चन्द्र भगवान् की कृपासे पण्डितजी के द्वारा प्राप्तहोगई हैं॥ चौ०-"बड़ेभाग्य भये उदय हमारे। जो करुणानिधि कार्य सँवारे॥" इसलिये सब घरूका भाइयोंसे प्रार्थना है कि अब अपने कर्म वा धर्म्मकी ओर आँखैं खोलकर देखैं और कृपा करके जैसा इस पुस्तक वंशावली में लिखा है उसके अनुसार कर्मोंको सुधारैं॥ इति.

हज़ारीबाग़ (छोटा नागपुर)
ता० २४ अक्टूबर १९१० ई०

रघुवीरशरण सेन
बंगालसर्वे आफ़िस

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ
घरूका-क्षत्रियवंशनिर्णय
प्रारभ्यते ।

इससमय किसी जातिका निर्णय करना बड़ा कठिन कार्य है, बहुतसी जातियें इसप्रकार की हैं कि जिनको उच्चकोटिमें माना जासकता है, और बहुतसी जाति इसप्रकार की हैं कि देखनेमें वे उज्ज्वल दिखाई देती हैं परन्तु उनका मूल उत्तम नहीं है, और सैकड़ों जाति इसप्रकार की हैं और संकरतासे निर्मित हुई हैं कि जिनका शास्त्रोंमें कहीं भी प्रमाण नहीं मिलता, शास्त्रोंमें उन्हीं जातियोंका वर्णन आता है जो नियम के अनुसार सवर्णासे उत्पन्न हैं वा जो वर्णोंकी संकरता से उत्पन्न हैं, परन्तु संकर जातियोंकी संकरतासे जो सहस्रों भेद होगये हैं, उनका शास्त्रोंमें वर्णन मिलना बहुत कठिन है।जहां तक हमको इन जातियोंका पता मिला है उनका वृत्तान्त संग्रह करके हमने कोई बात नहीं लिखी है, और न शास्त्रके विरुद्ध किसी जातिको ऊँचा नीचा कहना हमको अभिमत है, पाठक हमारे लेखोंसे इस बातका प्रमाण भलीभांतिसे पाचुके हैं। इससमय बहुतसे सज्जनोंकी प्रेरणासे हम घरूकावंशका निर्णय करते हैं कि जो जाति इस समय गोरखपुर–पीलीभीत आदि के प्रान्तोंमें फैली हुई है और संस्कारोंकी न्यूनतासे अपने उच्च व्यवहारोंसे रहित होकर अपने आचार विचार और व्यवहारों को भूल रही है, परन्तु इस घरूका जातिमें जो प्रतिष्ठित और

पढ़े लिखे मनुष्य हैं उनको अपने आचार–विचारोंका कुछ स्मरण है, और वह चाहते हैं कि हमारे आचार विचार पूर्ववत् होजायँ इसलिये शास्त्रके अनुसार पहले हम घरूका शब्दकी उत्पत्ति लिखते हैं कि यह घरूका शब्द कहांसे प्रकट हुआ, महाभारत आदिपर्व १५२ अध्यायमें लिखा है कि जिस समय पांचों पाण्डव माताके सहित दुर्योधनादिसे छिपे हुए वनमें सोरहे थे उस समय–

तत्र तेषु शयानेषु हिडिम्बो नाम राक्षसः।
अविदूरे वनात्तस्माच्छालवृक्षं समाश्रितः ॥ १ ॥

एक हिडिम्ब नाम राक्षस उस वनके बहुत ही समीप शाल-वृक्षके ऊपर स्थित था, उसने पांचों पाण्डवोंको सोता हुआ देखकर उनके मारनेकी इच्छासे अपनी बहन हिडिम्बासे कहा–

गच्छ जानीहि के त्वेते शेरते वनमाश्रिताः॥ १०॥

जाओ तुम देखो कि यह कौन वनमें शयन कर रहे हैं, भ्राताके वचन सुनकर हिडिम्बा वहाँगई और भीमसेनको देख कर मोहित होगई और मनमें कहने लगी–

अयं श्यामो महावाहुः सिंहस्कन्धो महाद्युतिः।
कम्बुग्रीवः पुष्कराक्षो भर्ता युक्तोभवेन्मम ॥ भा०

यह श्यामशरीर, महाभुजा वाला, सिंहकी समान स्कन्ध वाला, महाकान्तिमान्, शङ्खकी समान गर्दन वाला, कमल-लोचन मेरे योग्य भर्ता होसकता है, यह विचार कर उसने मानुषी स्त्रीका रूप करके शनैः२ भीमसेनके पास जाकरकहा, आप लोग कौनहो यहां बेधड़क कैसे सोरहे हो, तुमको यह विदित नहीं कि इस वनमें एक बड़ा दुरात्मा हिडिम्बनाम राक्षस निवास करता है, उसने मुझे तुम्हारा भेद लेनेको भेजा

है, परन्तु मेरा मन यह चाहता है कि मैं तुमको अपना स्वामी बनाऊं, और मैं इस राक्षससे तुमको बचाकर तुम्हारे साथ तीनों लोकमें विहार करूंगी। यह सुनकर भीमसेनने कहा मैं भाईजनोंको छोड़कर इस प्रकार तेरे साथ नहीं जासकता, हिडिम्बाने कहा मैं सबको बचा सकतीहूं आप अपने भ्राताओं को जगालो, भीमसेनने कहा मुझे राक्षससे कुछ भय नहीं है यह बातें होही रहीथीं कि इसी समय विलम्ब हुआ देखकर वह राक्षस स्वयं वृक्षपरसे उतर आया, उसे देखकर हिडिम्बा ने कहा, वह राक्षस आता है तुम मेरी पीठपर चढ़लो और भाइयोंको चढ़ालो मैं तुमको आकाशमार्ग में ले जाऊंगी। भीमसेनने कहा, तू मत डरै मैं इस राक्षसका वध करताहूं, इधर राक्षसने हिडिम्बाको बहुत सुन्दररूप किये देखकर क्रोधसे कहा, भला तू इस पुरुषकी कामना करती है, देख तेरे सामने मैं इन सबका वध करताहूं, इसप्रकार कहकर वह दौड़ा तब भीमसेनभी क्रोध करके उसके सामने हुए, इस प्रकार दोनों का घोर संग्राम होने लगा, वनके वृक्ष टूटने लगे, उस शब्दसे कुन्तीसहित चारों भाई जाग उठे तब कुन्तीने महासुन्दरी हिडिम्बासे कहा तू देवी है वा अप्सरा, यहां कैसे आई है। तब हिडिम्बाने कहा, तुम्हारे पुत्रका जिससे युद्ध होरहा है मैं उस राक्षसेन्द्रकी भगिनी हूं मुझे उसने तुम्हारे मारनेको भेजा था, परन्तु मैं तुम्हारे पुत्रको देख कामदेवके वशीभूत हुईहूं, मैंने इनको पति बना लिया है देर हुई देखकर वह यहां चला आया और मेरे स्वामीसे हिडिम्बका युद्ध होरहा है। यह सुनकर अर्जुन उस स्थान पर गये और भीमसेनको क्लेशित

देखकर कहा, मैं तुम्हारे लिये सहायताको उपस्थितहूं। भीमसेनने कहा, तुम कोई चिन्ता मत करो यह अब मुझसे बचकर नहीं जा सकता, और यह कहते कहते महाक्रोधकर उसको पशुकी समान पीचकर मार डाला, यह देखकर सब भाई बड़े प्रसन्न हुए। तब भीमसेनने कहा कि हिडिम्बा तुम यहाँसे चली जाओ पर उसने कहा मैं तुमको अपना पति बनाचुकी हूं, यदि मुझ सकामाको तुम त्याग दोगे तो मैं अपने प्राण त्यागन करदूंगी और फिर युधिष्ठिर से कहा, तुम इनको मुझे देदो मैं तृप्त होकर तुम्हारे पास फिर लादूंगी। यह सुनकर युधिष्ठिरने कहा तुम इन भीमसेनको दिनमें अपने पास रक्खो और रात्रिको सदा यहां लेआया करो।

स्नातं कृत्वाह्निकं भद्रे कृतकौतुकमङ्गलम्।
भीमसेनं भजेथास्त्वं प्रागस्तगमनाद्रवेः॥

अ० १५५ श्लोक १७॥

अर्थात् भीमसेन सन्ध्या और आह्निकसे निवटकर कौतुक मंगलकार्य कर चुकें, अर्थात् तेरे साथ परिणयकार्य सम्पादन करें, इसके उपरांत तुम भीमसेनको भजो और सन्ध्यासे पहिले पहिल ले आओ॥भीमसेनने कहा जबतक तेरे पुत्रकी उत्पत्ति नहीं होगी उतने समय तक मैं तेरे साथ रहूँगा, हिडिम्बाने यह बात स्वीकार की और भीमसेनको साथ लेकर अनेक वनों और उपवनोंमें अनेक प्रकारसे विहार करने लगी, उसने कामरूप करके भीमसेनको अनेक प्रकारसे प्रसन्न किया, कुछदिनों में राक्षसीके गर्भ रहा और उससे एक पुत्र जन्मा।

अमानुषं मानुषजं भीमवेगं महाबलम्।
यः पिशाचानतीत्यान्यान्बभूवातीवराक्षसान्॥३९॥

बालोपि यौवनं प्राप्तोमानुषेषु विशांपते ।
सर्वास्त्रेषु परं वीरः प्रकर्ष मगमद्बली ॥३५॥
सद्योहि गर्भान् राक्षस्यो लभन्ते प्रसवन्तिच।
कामरूपधराश्चैव भवन्ति बहुरूपिकाः ॥३६॥
प्रणम्य विकचः पादावग्रह्णात्सापितुस्तदा ।
मातुश्च परमेष्वासस्तौ च नामास्य चक्रतुः ॥३७॥
घटोहास्योत्कच इति माता तं प्रत्यभाषत।
अब्रवीत्तेन नामास्य घटोत्कच इतिस्मह ॥ ३८ ॥

महाभारत अ० १५१ ॥

यह अमानुष मनुष्यसे उत्पन्न होनेके कारण पिशाच और राक्षसोंको उल्लंघन कर गया, पिताके वीर्यके प्रभावसे भिन्न प्रकारका हुआ । बालकअवस्थामें ही युवा होगया और वह बली मनुष्योंके सब अस्त्रोंको जान गया। राक्षसी शीघ्र ही गर्भ धारण करतीं और शीघ्र ही उत्पन्न करतीं हैं उनके पुत्र इच्छानुसार अनेक रूप धारण कर सकते हैं। तब उस बालक ने माता पिताके चरणोंको नमस्कार किया और इन्होंने उसका नामकरण किया। इसका शिर बालोंसे रहित है और घड़ेके समान है इसकारण इसका नाम घटोत्कच हुआ। इसने पाण्डवोंसे बड़ी प्रीति सम्पन्न की और यह बात कहकर कि कार्यके समय उपस्थित हूँगा उत्तर दिशाको चला गया और हिडिम्बा भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी हुई जानकर चली गई ।

सहि सृष्टो मघवता शक्तिहेतोर्महात्मना ।
कर्णस्याप्रतिवीर्यस्य प्रतियोद्धा महारथः ॥ भा०

इन्द्रने शक्तिके कारणसे अतुल पराक्रमी कर्णका प्रतियोद्धा

महारथी यह घटोत्कच उत्पन्न किया। इसप्रकार भीमसेनके वीर्यसे हिडिम्बामें घटोत्कचकी उत्पत्ति हुई इस घटोत्कचका ही नाम भाषामें घरूका कहा गया, कवि छत्रसिंह विरचित विजयमुक्तावली अध्याय १० मुंशी नवलकिशोर प्रेस सन १८८६ ईसवी में लिखा है।

नरदेहीकी बास लहि, आई त्रिय गलगाजि।
नाम हिडंबी राक्षसी, घोर महावपु साजि ॥३०॥
तन दीरघ दीरघ उदर, दीरघ दंत कराल।
दीरघ मुख दीरघ श्रवण, दीरघ बाहु सुवाल ॥३१॥
आई गर्जत नारि वह, भीम न मानी शंक।
तरुवर लै संमुख गयो, करी न भय कछु अंक ॥३२॥
देखत साहस भीमको, भई परम वपु बाल।
राकाशशि षोडश कला, रूप लख्यो त्यहिकाल ॥३३॥

हिडंबी उवाच-दोधक छन्द।

मोमन रोचक आपन मानो, आपत्रिया करिके उरजानो।
मैं तुम देखिबली वर कीनो, नित्त चलो तव आयसुलीनो॥३४॥
आय हिडंब तहां तब गाज्यो, भीमइतै द्रुम लैकर साज्यो।
को कहि नारि कहां यह आयो, भेदकछू नहिं मैं अबपायो॥३५॥
दोहा-मेरो वीर हिडंब यह, कीजे युद्ध निशंक।
कछु विस्मय जिय जनि करो, लज्जा धरो न अंक ॥३६॥
नहिं गाजत धीरज रह्यो, तेरो बुद्धिनिधान।
यह न कछू तेरो करै, हित वर याहि निदान ॥३७॥

भीमसेन उवाच।

चो०-तेरो कहा भरोसो मोहि। वीर हतत रिस लागैतोहि।
जब याकी तू होइ सहाय। तब कछु मेरो कहा बसाय॥३८

हिडिम्ब उवाच।

दोहा–जानति तोको प्राणपति, नहिं राखति चित और।
तोसम यामें बल नहीं, हति हिडंब यह ठौर ॥३९॥
भयो असुर अरु भीम सों, अति गति मुष्टिप्रहार।
मल्लयुद्ध करि धर परे, है दोऊ बिकरार ॥४०॥
निकट न पायो भीम जब, जागे बांधव चारि।
निशिचर सों मंडत समर, अवलोक्यो सुखकारि॥४१॥

त्रोटक छंद।

अवलोकत भीमहि लाज भई,तब दानवके भुज कंठदई।
बरुकै वह दानववीर हयो, सब बंधवको बहुसुक्ख भयो ॥४२॥

गीतिका छंद।

धर्मसुतको मांगि आयसु सीख कुंती पै लही,
तव हिडंबी भीम व्याही विधिकरी जैसी चही।
रहत बीते दिन किते ता विपिनमें सुख साजही,
कंद मूलानि खात खनि२ जीविका यों राखही ॥ ४३ ॥

दोहा–रहत किते दिन जब भयो, ता कानन के धाम।
पुत्र हिडंवी के भयो, धर्यो घरूका नाम ॥ ४४ ॥

यहां इस लेखसे यहबात स्पष्ट होगई कि घरूका शब्द घटोत्कच शब्दका ही अपभ्रंश है, जो यह घरूका नामक प्रसिद्धि जाति है यह भीमसेनके पुत्र घटोत्कच के ही वंशज हैं, इसमें अब कोई भी सन्देह नहीं है कि कामरूप धारिणी हिडिम्बा और महाबली पवनपुत्र भीमसेन से घरूकाका जन्म है और घरूका के वंशज ही घरूक कहलाते हैं,इस बातका विचार तो हम आगे चल कर करेंगे कि घरूका जाति किस वर्णमें परिगणन की

जासकती है परन्तु पहले घटोत्कचके पुत्रको सेन की उपाधि प्राप्त हुई, और वह उपाधि आजतक इस घरूका जातिमें विद्यमान है- यह दिखाते हैं-

स्कंदपुराण माहेश्वरखण्डान्तर्गत कौमारखण्ड अध्याय ६१

जिससमय पांचों पाण्डव तीर्थयात्रामें गयेथे उस समय वहां श्रीकृष्ण भी विद्यमानथे, वहां सहायके लिये उन्होंने घटोत्कच का स्मरण किया और तत्काल ही घटोत्कच वहां आया राजा युधिष्ठिर ने कहा-

हैडंबस्य वनं सर्वं तस्य ये सैन्यराक्षसाः।
पाल्यमानास्त्वया साधो वर्धन्ते जनक्षेमकाः ॥ १४॥

हे घटोत्कच ! हिडंबका वह सब वनका राज्य और उसकी सेनाके सब राक्षस उनकी तुम भलीप्रकार से पालना करते हो और वे वृद्धिको प्राप्त होकर प्रजामें मंगलता करते हैं, इस पर घटोत्कचने उत्तर दिया।

तद्राज्यं शासनेस्थाप्य दुष्टान्निघ्नंश्चराम्यहम्।
माता कुशलिनी देवी तपोदिव्यमुपाश्रिता ॥ १७॥

मामाके राज्य पर शासकों को स्थापन करके मैं दुष्टोंको दमन करता हुआ विचरताहूं, माता कुशल है और तपस्या करतीहै उसके कहनेसे मैं आया हूं यह सुनकर धर्मराजने बहुत बड़ाई करके कहा-

दुष्कुलीनापि याभक्ता सूतेऽपत्यञ्च भक्तिमत्।
कुलीनमेव तन्मन्ये ममेदं मतमुत्तमम् ॥ २७॥

अर्थात् ओछे कुलमें उत्पन्न हुई स्त्रीभी यदि भक्तिमती हो और भक्तिमान पुत्रको उत्पन्न करै हम उसको कुलीन ही मानते हैं

अष्टानां देवयोनीनां यतोजन्म च यौवनम्।
सद्य एव भवेत्तस्मात्सद्योऽस्यासीच्चयौवनम्॥

आठ देवयोनियोंमें जिसकारण कि इसका जन्म है इस कारण शीघ्रही उनकी युवाअवस्था होजाती है, श्रीकृष्णसे यह कहकर धर्मराजने कहा इसके विवाहके लिये मुझे बड़ी चिन्ता है, तब भगवान्‌ने विचारकर कहा कि प्राग्ज्योतिषपुरके नरपति मुर असुरकी कन्या इसके योग्यहै मैंने जब मुर दैत्य को माराथा तव वह कन्या युद्ध करने लगी, जब मैंने उसके मारनेको चक्र उठाया, तब कामाख्यादेवीने उसकी ओर होकर मुझे और उसे युद्धसे निवारण किया और यहभी उससे कहा आगे यह एक प्रकारसे तुम्हारे श्वशुर होनेवाले हैं, यह सुन कर वह निवृत्त हुई और वहीं निवास करती रही, वही घटोत्कच के योग्यहै अनेक दैत्य उसके लुभानेको गये पर जो उसने प्रतिज्ञाकीहै कि मेरे प्रश्नका जो उत्तर देगा और मेरी समान वली होगा वह मेरा भर्ता होगा।

उसको कोई पूरा नहीं करसका यह सुनकर भीमसेन ने घटोत्कच को वहां जाने की आज्ञा दी और वह आकाश मार्ग होकर प्राग्ज्योतिषपुरको गया और वहां जाकर उसने उसकी सखी से कहा कि मैं तुम्हारी सखीको देखना चाहता हूं, कर्णप्रावरणाने कहा तुम क्यों ऐसा कहते हो यहां सैकड़ोंकामुक आये और परास्त होकर नष्ट होगये तुम मेरे संग अपना विवाह करलो घटोत्कच ने कहा तुम ऐसा मत कहो और कामकटंकटासे समाचार कहो यह सुनकर उसने उस बालासे समाचार कहा तब उसने इसको बुलाया

और यह अनुचरोंको छोड़कर उस घरमें प्रविष्ट हुआ- और प्रश्न तथा बलके साथमें उसको जीतलिया और उसके साथ में दिल्ली की ओर आया और पाण्डवोंके समीप पहुँचा और-

शुभे लग्ने पाणिमस्याजग्रहे भीमनंदनः।स्कन्दपु०

और भीम पुत्रने शुभलग्नमें उसका पाणिग्रहण किया।

कुरूणां राक्षसानां च प्रोक्तोत्तम विधानतः॥५६॥

जैसी कौरवों के यहां की और राक्षसोंके यहां की विधि थी वह सब की गई, फिर वह सबकी आज्ञा पाकर-

शुभं हिंडबस्य वने स्वराज्यं समुपा व्रजत्॥५०॥

हिडम्बके सुन्दर बनमें अपने राज्यमें आनकर प्राप्त हुआ और वहां जाकर दोनों अनेक प्रकार से विहार करने लगे-

एवं विक्रीडितस्तस्य गर्भो जज्ञे महाद्युतेः।
हैडम्बैराक्षसाद् गर्भाद्बालसूर्यसमप्रभः ॥६२॥
ततोभैमिस्तमालिङ्ग्य पुत्रंवचनमब्रवीत् ॥६६॥
वर्वराकार केशत्वात् वर्वरीकाभिधो भवान्।
भविष्यति महाबाहो कुलस्यानन्दवर्द्धनः॥६७॥

अ० ६०

इसप्रकार विहार करते२ उसके बाल सूर्यकी कान्ति समान एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और वह तत्काल युवा होगया माता पिता से अपने नामकरण के लिये कहा, माता पिता ने कहा जो कि तुम्हारे बाल बर्वरीक आकार वाले हैं इससे तुम्हारा नाम बर्वरीक होगा ६०अध्याय पूरा हुवा। तब घटोत्कच उस बर्वरीकको लेकर श्रीकृष्णके पासगया और बर्वरीकने

प्रणाम कर श्रीकृष्ण से कहा महाराज संसार में कल्याण के बहुत मार्ग हैं।

तदेवं शतसंख्येषु श्रेयस्सु पुरुषोत्तम।
ममचैवं कुलस्यास्य श्रेयो यद्‌ब्रूहि निश्चितम्॥१७॥

हे भगवन्! सहस्रोंही कल्याण के मार्ग हैं पर मेरे कुलके निमित्त जो कुछ कल्याणका मार्ग हो सो निरूपण कीजिये, इस पर भगवान् श्रीकृष्ण चारों वर्णों का धर्म निरूपण करते हुए बोले—

तद्भवान् क्षत्रियकुले जातोसि कुरु तच्छृणु।
वलं साधय पूर्वं त्वमतुलं तेन शिक्षय॥ २३॥
दुष्टान्पालय साधूंश्च स्वर्गमेवमवाप्स्यसि।
वलं च लभते पुत्र देवीनां सुप्रसादतः॥ २४॥
तद्भवान् वलप्राप्त्यर्थं देव्याराधनमाचर॥ २५॥
नमस्कारेण मंत्रेण पंचयज्ञान्न हापयेत्॥ २२॥

सो तुम क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न हुए हो तुमको जो श्रेय है सो सुनो, पहले वलका साधन करना चाहिये पीछे उससे दुष्टोंको शिक्षा दो साधुओंकी पालना करो तो स्वर्गकी प्राप्ति होगी, इसलिये पहिले बलके साधने को तुम देवीका आराधन करो और पंचयज्ञको त्यागन न करना चाहिये महीसागरसंगम में गुप्तक्षेत्रमें जाकर तप करो वहां देवीकी आराधना करके तुम चारों पदार्थोंको प्राप्त होगे और तुम्हारी सुहृदता देखकरमैं तुम्हारा एक नाम सुहृदय रखताहूँ यहसुनकर वर्वरीक तपस्या करनेको चला गया, घटोत्कच अपने स्थानको गया

वर्वरीकने तीनवर्षमें तीनकालदेवीकी पूजा करके भगवतीको प्रसन्न किया, और देवियोंने कहा तुम कुछ दिनोंतक यहीं और रहो तो सिद्धिकी प्राप्ति होगी, उसी समय एक मागध ब्राह्मण काशीसे वहां विद्या पढ़कर आया और शिवजीके गुह्येश्वर नामक सप्तलिंगोंका पूजनकर देवीकी आराधना की, देवीने कहा वर्वरीकके साथ मिलकर कार्य करो तुम्हारी कामना पूरी होगी तब उनदोनोंने कार्यारम्भके पूर्व गणेशपूजन किया।

ततः सुखासनो भूत्वा गं गुरुभ्यो नम इति।
मंत्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा स्वगुरुभ्यःप्रणम्य च॥
ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः इत्यादि—

सुखासनसे बैठ गुरुको प्रणाम कर १०८ मंत्र जप गुरुको प्रणामकर गणेशपूजन किया।

इसीप्रकार दूसरे मंत्र जपे और उसमें अनेक विघ्न हुए, नागकन्या मिलीं उनके पूछनेपर वर्वरीकने कहा।

अहंकुरुकुलोत्पन्नःपाण्डुपुत्रस्य पौत्रकः।
वर्वरीक इतिख्यातस्तं दैत्यं हन्तुमागतः॥६६अ.६३॥

कि मैं कुरुकुलमें उत्पन्न पाण्डुपुत्रका पौत्रहूं, वर्वरीक मेरा नाम है दैत्योंको मारनेको आयाहूं, यह कहकर उसने दैत्यका वध किया, पश्चात् मन्त्रोंको जपकर सिद्धि प्राप्तकी देवीने प्रसन्न होकर कहा।

देवीभिः सहिता देवा संमान्य विजयं च ते।
सिद्धैश्वर्यं ददुस्तस्मै सिद्धसेनेतिनाम च॥८२अ०६३

उन देवताओंने मिलकर देवियोंके सहित उसका सन्मान कर उसको सिद्धैश्वर्य दिया और सिद्धसेन नाम दिया

यह वर लेकर वर्वरीक आनन्दको प्राप्त हुआ। स्कन्दपुराणके अन्तर्गत इस कथासे यह स्पष्ट विदित होता है कि भगवान् कृष्णने घटोत्कचके पुत्रको क्षात्रिय स्पष्ट कहा है, और यहां देवीने तथा देवताओंने उसका नाम सिद्धसेन कहा है, और स्वयं वर्वरीकने अपनेको कुरुकुलमें उत्पन्न माना है, तब अब इन ग्रन्थोंके अनुसार घरूकावंशके क्षत्रिय होने तथा कुरुवंशमें होने का कोई सन्देह नहीं रहा, यह वही वर्वरीक है जिसका शिर श्रीकृष्णने भारतमें काटाथा और उसका शिर लकड़ीपर स्थापन किया और उसने समस्त युद्ध अवलोकन किया और अन्तमें यह स्मरण करने से दुःख दूर करनेवाला हुआ। घरूकाजातिके कल्याण के लिये—हम स्कन्दपुराणसे इनका मंत्र लिखते हैं।

जय जय चतुर शीति कोटि परिवार सूर्यवर्चाभिधान पक्षराज जय भूभारहरणप्रवृत्त लघुशाप प्राप्त नैर्ऋतियोनि-संभव जय कामकंटकटाकुक्षिराजहंस जय घटोत्कचानंद वर्द्धन वर्वरीकाभिधान जय कृष्णोपदिष्ट श्रीगुप्तक्षेत्र देवी-समाराधन प्राप्तातुलवीर्य जय विजय-सिद्धिदायक जय पिंगलारेपलेन्द्र दुह द्रुहा नव कोटीश्वर पलाशन दावा-नल जय भूपातालान्तराले नागकन्यापरिहारक जय भीममानमर्द्दन जय सकलकौरवसेनावधमुहूर्तप्रवृत्त जय श्रीकृष्णवरलब्ध सर्ववरप्रदान सामर्थ्य जय जय कलिकाल वंदित नमोनमस्ते पाहि पाहीति।

इसके पाठसे वर्वरीक प्रसन्न होते और सब विघ्न दूर होते हैं, महाभारत के द्रोणपर्वमें घटोत्कच का एक पुत्र अंजन पर्वा लिखा है, इससे और वर्वरीक से इस कुलकी प्रतिष्ठा हुई है।

घटोत्कचसुतः श्रीमान् भिन्नांजनचयोपमः ॥ ८० ॥
ववर्षांजनपर्वा स द्रुमवर्षं नभस्तलात् ।
ततोमायाधरं द्रौणिर्घटोत्कचसुतं दिवि ॥ ८७ ॥
महीगत इवात्युग्रः श्रीमानंजनपर्वतः ॥ ८८ ॥

महाभारत द्रोणपर्व अध्याय १५६

इत्यादि प्रमाणसे घटोत्कच का बेटा अंजनपर्वा पाया जाता है ।

अब सेन पदवी, क्षत्रियकुल, तथा कौरवकुलका पुराण के अनुसार तौ निर्णय होचुका, अब हम कुछ धर्मशास्त्र के वचन यहां उतारते हैं जिससे यह जाति भीमसेनके कुल गोत्र वाली होसकती है ।

पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेहजायते ।
जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥ ८ ॥
यादृशं भजतेहि स्त्री सुतं सूते तथा विधम् ।
तस्मात्प्रजा विशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥ ९ ॥

मनु अ० ९ श्लोक ८

पति स्त्रीमें प्रविष्ट होकर गर्भरूप हो भार्यामें उत्पन्न होता है, और वही जायाका जायापन है जो पति स्त्रीमें फिर उत्पन्न हो ॥ ८ ॥ स्त्री जिसप्रकारके पतिको भजती है उसी प्रकार के सन्तानको उत्पन्न करती है, इसकारण सन्तान की शुद्धि के निमित्त यत्नपूर्वक स्त्री की रक्षा करै ॥ ९ ॥

विशिष्टं कुत्र चिद्वीजं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् ।
उभयं तु समं यत्र सा प्रसूतिः प्रशस्यते ३४ ॥

कहीं तो बीज प्रधान होता है जैसा कि जिस बीजके लिये क्षेत्र बोया जाता है वह उस बोनेवाले का है, कहीं क्षेत्रकी प्रधानता होती है जैसे पाण्डु आदि विचित्रवीर्यके कहाये, परन्तु यथार्थ में सवर्णा विवाह का पुत्र श्रेष्ठ है ।

वीजस्य चैव योन्याश्च वीजमुत्कृष्टमुच्यते ।
सर्वभूतप्रसूतिर्हि वीजलक्षणलक्षिता ॥ ३५ ॥

बीज और क्षेत्र इन दोनों में वीज ही अधिक कहा है क्योंकि सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति बीजके चिह्नसे संयुक्त होती है ।

सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु ।
आनुलोम्येन सम्भूता जात्याज्ञेयास्तएवच॥अ०१०।५

चारों वर्णोंमें समान जातिवाली अक्षतयोनि वाली विवाहिता स्त्रियोंमें अनुलोम विधिसे उत्पन्न हुए पुत्र पिताकी ज्ञाति वाले ही होते हैं ।

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान्सुतान् ।
सदृशानेव तानाहुर्मातृदोषविगार्हितान् ॥ ६ ॥

अपनेसे नीच वर्णवाली स्त्रियोंमें द्विजोंसे उत्पन्न हुए पुत्र माताके दोषसे निन्दित होकर पिताकी समान होते हैं, ठीक वैसी जातिके नहीं होते ।

तपोवीज प्रभावैस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ।
उत्कर्षञ्चापकर्षञ्च मनुष्येष्विह जन्मतः ॥४२॥

द्विजातियोंसे सजातीय और अनन्तर वर्णोंकी स्त्रियोंमें उत्पन्न हुए छः प्रकारके पुत्र तप और वीजके प्रभावसे युग युगमें जन्मकी अपेक्षा मनुष्योंमें उत्तमता और नीचताको प्राप्तहोते हैं

सजातिजानन्तरजाः षट् सुता द्विजधर्मिणः ।
शूद्राणां तु सधर्माणः सर्वेपध्वंसजाः स्मृताः ॥४१॥

द्विजातियोंसे सजातीय और अनन्तर वर्णकी स्त्रियोंमें उत्पन्न हुए छःपुत्रोंका यज्ञोपवीत संस्कार होता है और द्विजोंसे अनुलोम विधिसे पैदाहुए सूतादिका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता

जातोनार्यामनार्यायां मार्यादार्योभवेद्गुणैः ।
जातोऽप्यनार्यादार्यायां मनार्य इति निश्चयः ॥६७॥
अ० १० ॥

शूद्रा वा अनार्या स्त्रीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ पुत्र यदि स्मृतियोंमें कहे हुए पाक यज्ञादि गुणोंसे युक्त हो तो आर्य ही होता है, और शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न हुआ पुत्र प्रतिलोमज होनेसे अनार्य ही होता है यह शास्त्रकी मर्यादा है ॥६७॥

बीजमेके प्रशंसन्ति क्षेत्रमन्ये मनीषिणः ।
बीजक्षेत्रे तथैवान्ये तत्रेयं तु व्यवस्थितिः ॥७०॥
अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमन्तरैव विनश्यति ।
अबीजकमपि क्षेत्रं केवलं स्थंडिलं भवेत् ॥७१॥
यस्माद्बीजप्रभावेण तिर्यग्जा ऋषयोभवन् ।
पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते ॥७२॥

कोई पण्डित बीजकी प्रशंसा करते हैं कोई क्षेत्रकी प्रशंसा करते हैं कोई बीज और क्षेत्र दोनों की प्रशंसा करते हैं वहां यह व्यवस्था है कि॥७०॥ऊषर भूमि में बोया हुआ बीज फल के बिना दिये बीच ही में नष्ट होजाता है, बीज से रहित अच्छा भी क्षेत्र केवल स्थंडिल ही होजाता है उसमें

कुछभी नहीं उपजता है॥७१॥बीजके प्रतापसे तिर्यग्योनि में उत्पन्न हुए ऋष्यशृंग आदि ऋषिपूजित और वेदज्ञाता होने से प्रशंसा के योग्य हुए, आशय यह कि बीज और योनि के मध्यमें बीजसे उत्तम जाति ही प्रधान है॥ ७२॥ इन धर्मशास्त्र के वचनों से यह स्पष्ट होगया है कि हिडिम्बा में भीमसेनसे जो जन्मा है वह घरूका बीजके प्रभावसे भीमसेन के कुलमें गिना जासकता है पूर्वमें लिखे श्लोक ६। ३५ तथा अ० १० श्लोक ५ इस बात की साक्षी देते हैं कि बीजही प्रधान है श्लोक६ से यह बात स्पष्टहोती है कि यदि माता सवर्णा न होकर निकृष्ट वर्ण की हो तो वह सन्तान पिताकी जातिसे कुछ उतरी हुई जाननी,हिडिम्बा कामरूपिणी है यह यक्ष राक्षस देवयोनिमें लिखे हैं, इससे इसकी सन्तान पतिके कुल गोत्र वाली होगी श्लोक४१से विदित होता है कि ऐसे सन्तान संस्कार के योग्य होते हैं, और स्कंदपुराणके माहेश्वरखंडमें श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से कहा है कि तुम पंच-यज्ञका किसीप्रकारसे लोप न करना तब इनके संस्कारोंमें सन्देह क्या होसकता है, इन प्रमाणों से घरूकावंश का क्षत्रिय होना स्पष्ट होचुका अब यह देखना है कि विजय मुक्तावली के सिवाय कहीं दूसरी जगहभी घटोत्कच को घरूका लिखा है, हिडिम्बके प्रसंगमें लिखागया है।

पारथवचन सुनत भे क्रोधा। पारथ दैत्य अतीबल योधा॥
तब दानवको भीम पछारा। मुष्टिक घाव उदर परमारा॥
लागत घाव शब्द घहराना। पड़ा भूमिमें छाड़ेउ प्राना॥
दैत्यको वधो हर्ष तब कीना। दुष्ट दैत्यको यमपुर दीना॥

कन्या सो मानुषतनधारी । भीमके संग करत सुखभारी ॥
नाना गिरिवन पर्वत देखा । पाँच बन्धु और कुन्ती देखा ॥
संग हिडिम्बिनि पियके पासा । दीप दीप देखा परगासा ॥
हिडिम्बिनि गर्भ पुत्र अवतारा । नाम घरूका वीर अपारा ॥
घरवत कच्छ नाम विस्तारा । अस्त्र शस्त्र सिखये विस्तारा ॥
तब हिडिम्ब कहत बुझाई । जाऊं देश तौं आज्ञा पाई ॥

महाभारत छपा हुआ जैन प्रेस पुराना रकाबगंज लखनऊ सन् १९०७ ई० पेज ५१ आदिपर्व ।

अब इससे स्पष्ट होगया कि घरूका यही भीमसेनका पुत्र घटोत्कच है, घरूकाजातिके लोगों में यह कहावत आजतक चली आती है कि हमलोग घरूका राना हैं और भीमसेन के वंशज हैं इनके यहांका वचन है कि "सात ताड़ भीम परिमाना। चौदह ताड़ घरूका राना" जब पाण्डवोंका स्वर्गारोहण हुआ उससमय महाराज युधिष्ठिरने गोंडा अवधका राज्य भीमसेन के पुत्र घटोत्कचके बेटे अञ्जनपर्वाके सुत मेघबर्ण को दिया उस समय सब लोगोंमें परमप्रीति थी एक दिनकी बात है कि घरूकावंशके राजा जब अवधमें राज करते थे उनसे ब्राह्मणोंने कहा महाराज आपसे हम कुछ मांगना चाहते हैं, राजा ने वचन दिया तब ब्राह्मणोंने कहा आप हमको अपना शिर दीजिये, आपके रुधिर का तिलक लगाकर हम तिलकधारी राजाहोंगे, राजाने यह स्वीकार किया पर इतना उनसे मांगा कि जब विवाह होकर तुम्हारी पतोहू तुम लोगोंके यहां आवे जाय तब उसके आंचर परहमारी पूजाहो, यह बात वहांके ब्राह्मणोंने स्वीकार करली, और ऐसाही हुआ पीछे उनका राज्य नष्ट होनेसे विपक्षियोंने इस जातिको मारना आरम्भ

किया और घरूकाजाति छिन्न भिन्न होगई, और भयके कारण धनी लोगोंकी सेवा वृत्ति स्वीकार करली घरमें छिपे रहने से घरूका कहाये कहीं २ के निवासी अबभी अपने को घरूका राना कहते हैं,कोई राना कहते हैं कहीं २ के घरूका इतने गिरगये हैं कि पानी भरने तकका कार्य करते हैं, परन्तु विचारवान् लोगोंने अपनी असलियत खोजनेकी चेष्टा आरम्भ की है, अब यह विचार कर्तव्य है कि घरूकाजाति कहां २ पाई जाती है, इलाका पीलीभीत खीरी सीतापुरमें थोड़े बहुत पाये जाते हैं,परन्तु अधिकतर जिला गोंडा व बहरायचमें विशेष कर रहते हैं, बाराबंकी,फैजाबाद व बस्ती में कम रहते हैं, इस जातिके कहीं २ नामान्तर भी होगये हैं, अनुमान होता है अंजनपर्वा की सन्तान भारतके युद्धके उपरान्त नीच लोगों की संगतमें पड़गई और अपने धर्म कर्म भी खो बैठी अवधमें एक गोंड़िया जाति निवास करती है, बहुतसे घरूका उस जाति में सम्मिलित होगये हैं,कोई कहते हैं जिला बहरायचमें यह भुइंहार कहाते हैं पर यह अनुमान निश्चित नहीं इस घरूकावंश के जगनसेन नामक एक वृद्ध पुरुष ने एक पुरानी कहावत इसप्रकारसे कही है कि किसीसमय गोंडा के राजा के पास रामानन्द सेन नामक घरूका एक अनुचर था राजाके सन्मुख वह तथा कई दूसरे पंडित विद्यमान थे इसी अवसरमें एक भुजकैटा चिड़िया "जो कि ठाकुरजी २ कहती है" राजा के सामने बोली "राजा मरै घरूका रामानन्द का राज हो" उसकी बोली सुन ज्योतिषी लोगोंने शास्त्रको देखकर राजा से कहा कि महाराज यह चिड़िया कहती है राजा मरै घरूका रामानन्द का राज हो अर्थात् तुम्हारा शरीर

जब छूटैगा तब इसी रामानन्द का राज होगा, राजाने यह सुनकर अपने हाथ से शिर काट लिया कारण कि ज्योतिषियों ने यह भी कहाथा कि इसके मारडालने से आप अकण्टक राज्य करेंगे लगभग ५०० वर्ष की बात है इससे भी विदित होता है कि घरूका शब्द पुराना है।

ग़दर जो १८५७में हुआ था उस समय गोंडेके राजासे कुछ लोगोंने इसबातकी शिकायत की कि महाराज घरूका लोगोंने अंगरेजोंको बहुतसी बातोंका पता दिया है और देते हैं यह सुन कर राजाने दस पन्द्रह हजार घरूका वंशियोंको इकट्ठा किया और कहा तुमलोग हमारे साथ अंगरेजोंसे मुकाबला करनेको चलो जब बस्तीके समीप लम्तीके स्थानपर दोनोंका मुकाबला हुआ तब राजाने घरूकावंशको आगे करदिया, और बहुतसे घरूका उस लड़ाईमें मारे गये बाबू दुर्जनसेन घरूका उस लड़ाईमें विद्यमान थे यह बात उनकी आँखों देखी हुई है उस समय जो पल्टनें थीं उनमें बहुतसे घरूका सूबेदार जमादार और हवल्दार थे।

इत्यादि कहावतोंसे भी यह बात सिद्ध होती है कि घरूकावंश क्षात्रियत्व लिये था और इस जातिने राज भी किया है जब हम इसबातकी खोज करते हैं कि यह जाति भी एकप्रकार की क्षत्रिय है तब यह पता लगाना उचित मालूम होता है कि इनके गोत्र किसप्रकारके हैं,यदि ऋषियोंसे मिलते हुए इनके गोत्र हैं तो यह अवश्य क्षत्रिय हैं और यदि वैसे गोत्र नहीं हैं तब इस बातमें शक होगा कि यह कदाचित् क्षत्रिय नभी हों, घरूका जातिमें मुख्य गोत्र दो पाये जाते हैं शांडिल्य,

का गोत्र उच्चारण करके कार्यसम्पादन करनेका नियम होना चाहिये, जिनके गोत्र ऋषियोंसे सम्बन्ध करनेवाले हैं इसमें संदेह नहीं कि वह जाति भी संस्कारवाली होंगी चाहे इस समय उसके संस्कारोंमें हेर फेर होगया हो चाहे वे लुप्त हो गये हों पर एक समय वे संस्कारयुक्त अवश्य थे, इसमें संदेह नहीं कि जिनके संस्कार सर्वथा लुप्त होगये हैं वे व्रात्य हो गये और उनका अपने स्थानपर पहुँचना कठिन है जैसा मनु-जी कहते हैं।

शनकैश्च क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥

मनु० ४३ अ० १० ॥

अर्थात् शनैः२ क्रियाके लोप होजानेसे यह क्षत्रिय जाति ही लोकमें वृषलत्वको प्राप्त होकर वृषल होगई, परन्तु जिन के यहां उस क्रियाका कुछ अंश शेष है वे अभी अपने पुराने संस्कारोंको शुभकर्म करनेसे प्राप्त होसकती हैं, इसीसे जिन ऋषियोंका गोत्र इस जातिमें है उनका देवता वेद और प्रवर हम इस स्थानपर लिखते हैं।

असितोदेवलश्चैव शाण्डिल्यश्चेति च त्रयः।
शाण्डिल्यप्रवराह्येते मुनिभिः परिकीर्तिताः ॥३॥
कश्यपोवत्सरश्चैव नैध्रुवः काश्यपाः स्मृताः ॥

शांडिल्य गोत्रके असित देवल और शांडिल्य प्रवर हैं कश्यप गोत्रके कश्यप वत्सर नैध्रुवः प्रवर है व्याघ्रपाद गोत्रका सांकृति प्रवर है जैसा ऊपर लिख चुके हैं इन गोत्रवालोंका यजुर्वेद और माध्यन्दिनी शाखा है, जब यह ऋषिवेदसे सम्बन्ध

रखते हैं तब इनके संस्कार भी वैदिक होने चाहिये, और इनका क्रिया कलाप यथायोग्य होना उचित है, मनुजी कहते हैं

आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्तएव च ।
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विजः ।

अ० १ श्लो० १०८

आचारही परमधर्म है ऐसा वेद और स्मृतियोंमें कहा गया है, इससे कल्याणकी इच्छावाले द्विजको आचारकी शुद्धि सदा करनी चाहिये कारण कि–

श्रुतिःस्मृतिःसदाचारःस्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥ २ । १२

श्रुति और स्मृतियोंमें कहा हुआ धर्म तथा सत्पुरुषोंका आचरण तथा आत्माका हित कृत अनुष्ठान यह साक्षात् धर्मका लक्षण है इन प्रमाणों से अपने अनुष्ठीयमान धर्मको करनेसे उत्कर्षिता प्राप्त होती है । अब इस स्थलमें यह शंका होती है कि जिस वर्णमें बहुत समय से संस्कार न होता हो वह वेदके मंत्रोंसे च्युत होजाता है फिर उसका बिना उत्कृष्टताको प्राप्त हुए वैदिकसंस्कार नहीं होसकता, हम इस बातको ही स्वीकार करते हुए यह कहते हैं कि संस्कार तो होना चाहिये, इसीलिये व्रात्यस्तोम आदि प्रायश्चित्त लिखे हैं, प्रायश्चित्त कराकर संस्कार कराने उचित हैं और जब विशेष कथन हो तो पौराणिक संस्कारमें तो कोई आपत्ति किसीप्रकारसे नहीं होसकती इसकारण दूसरी रीतिसे उत्कर्षताकी प्राप्ति पर्यन्त संस्कारबराबरहोने चाहिये अब जोसंस्कारहोने चाहिये सोलिखते हैं

गर्भाधानसंस्कार ॥ १ ॥

संस्कारोंमें पहिला संस्कार गर्भाधान है इसीको ऋतुदान

कहते हैं और इसका समय जब होता है कि जब स्त्री रजोवती हो उस दिनसे लेकर चार रात्रियें त्याग देनी चाहियें कारण कि शास्त्रमें कहा है-

प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी।
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनिशुद्ध्यति ॥

अर्थात् पहले दिन चाण्डाली दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी तीसरे दिन धोबनकी समान चौथे दिन शुद्ध होती है, चार दिन यह और बीचमें अमावस्या वा पूर्णमासी आपड़े तो दो दिन यह त्यागदे, शेष रात्रियोंमें ऋतुदान का समय है, इनमें सम रात्रिमें गमन करनेसे पुत्र और विषम रात्रिमें गमन करने से कन्या होती है, परन्तु पुरुषका वीर्य इसमें भी प्रधान है, वीर्य अधिक हो तो पुत्र रज अधिक हो तो कन्या का जन्म होता है, समान होनेसे नपुंसक, तथा वीर्यकी न्यूनता होनेसे गर्भकी स्थिति नहीं होती इसमें मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता है उत्तम चन्द्रमा और नक्षत्र देखना चाहिये, शयनागार स्वच्छहो उत्तम धर्मसम्बन्धी चित्रहों स्त्री पुरुष दोनोंके धर्मभाव सम्पन्न समागमके समय होनेचाहिये, विधान इसका संस्कारपद्धति में देखना चाहिये वा दशकर्मपद्धति में देखना चाहिये।

पुंसवनसंस्कार ॥ २ ॥

दूसरा संस्कार पुंसवन कहा जाता है, यह गर्भाधानसे दूसरे तीसरे अथवा चौथे महीनेमें करना चाहिये, इसमें गर्भिणी स्त्रीको छायामें बैठाकर दूध तथा ओषधियों का रस नासिकाके दक्षिण रन्ध्रमें सुंघाया जाता है, पीछे शास्त्रके अनुसार खीर बनाकर उसका हवन किया जाता है, और खीरका

शेषभाग पति पत्नीको भक्षणके लिये दिया जाता है, यथा-सम्भव पुनर्वसु नक्षत्र में या श्रवणमें बढ़की कौंपलको पीस अर्क निकालकर नासिकाके दहिने रन्ध्रमें सुंघाया जाय अथवा पिलाया जाय ।

सीमन्तोन्नयन संस्कार ॥ ३ ॥

यह तीसरा सीमन्त संस्कार गर्भस्थितिसे चौथे छठे अथवा आठवें महीनेमें यथाशक्ति उत्सवके साथ करना चाहिये ।

इस कर्मके करने से स्त्री का मन प्रसन्न आरोग्यता गर्भ स्थिर और वलवान् होता है, इसकी समस्त क्रिया संस्कार-भास्कर वा संस्कारपद्धति के अनुसार करनी चाहिये ।

जातकर्मसंस्कार ॥ ४ ॥

यह संस्कार उस समय से आरम्भ होता है कि जिस समय स्त्री प्रसव के आसन्नहो, पुत्रके प्रकट होनेपर नाल छेदनसे पहले यह संस्कारकरनाहोता है इसमें स्वस्तिवाचनादि करके बालक के दहिने कान में मंत्र जपा जाता है बालकके उत्पन्न होते ही स्त्री के दूध उत्पन्न होता है और वह दुग्ध बालक का ही भाग है इसकारण जहांतक होसकै यदि रोगिणी न हो तौ बालकको माता हीका दूध देना हितकारी है, धाय का ऐसा हितकर नहीं है, और संस्कारोंका यही प्रयोजन है कि इस शरीरमें रज वीज का जितना दोष है वह सब दूरहोजाय, और यह शरीर ब्रह्म प्राप्ति करसकै, जिससे फिर माता का दूध न पीना पड़े, यही मुख्यकर्तव्य है कि जिससे संसार वन्धन छूटकर यह आत्मा शुद्ध हो, इससे वैदिक और पौराणिक संस्कारों का कभी त्यागन करना न चाहिये, बिना संस्कारों के यह प्राणी पशुधर्मा होजाता है ।

नामकरणसंस्कार ॥ ५ ॥

बालक के उत्पन्न होनेसे दशवें तथा ग्यारहवें दिन नामकरणसंस्कार करना चाहिये, इसमें भी ज्योतिषशास्त्रके अनुसार मुहूर्त्त देखना चाहिये, ब्राह्मणके अन्तमें शर्मा, क्षत्रिय के अन्तमें वर्मा, और वैश्यके नाम के अन्तमें गुप्त पद रखना चाहिये नाम जहां तकहो दो या चार अक्षरों का ही रखना चाहिये, पीछे सब कृत्यकर बालकको आशीर्वाद दे अच्छेनाम रक्खे जो सार्थ हों।

निष्क्रमणसंस्कार ॥ ६ ॥

घरसे बाहर जहाँ शुद्ध वायुहो वहां बालक को लेजाना निष्क्रमणसंस्कार है यह प्रसव कालसे चौथे या तीसरे महीने शुक्लपक्षकी तीज या पंचमी को उत्तम दिनमें करै, बालकको नवीन वस्त्र पहनाकर पवित्र स्थानमें लेजाना उचित है और सूर्य भगवान् का दर्शन कराय आशीर्वाद देकर घर लावै।

अन्नप्राशनसंस्कार ॥ ७ ॥

बालकमें तेजकी इच्छा करने वाला पुरुष छठे महीने में अन्नप्राशन करावै अच्छे मुहूर्त्त में गऊका दूध लाकर उसकी खीर बनाय आहुति देकर पीछे खीर बालक को चटावै, कन्याओं का यह संस्कार पंचम मासमें करना चाहिये।

चूड़ाकरणसंस्कार ॥ ८ ॥

यह चूड़ाकरणमुण्डनसंस्कार कहाता है यह मुंडन पहले तीसरे वा पांचवें वर्षमें करना चाहिये इसमें उत्तरायण सूर्य शुक्लपक्ष शुक्र बृहस्पतिका उदय चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्रवार दोयज तीज पंचमी सप्तमी अष्टमी दशमी एकादशी द्वादशी

त्रयोदशी तिथि लेनी चाहिये कोई किसी तीर्थ या देवी देवता के स्थानपर मुंडन कराते हैं यह प्रथाभी उत्तम है।

कर्णवेधसंस्कार ॥ ९ ॥

तीसरे या पांचवें वर्षमें बालकके कान छेदने चाहिये इस संस्कार का नाम कर्णवेध है कार्तिक फाल्गुणादि महीनों के शुक्लपक्ष, हस्त, अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, श्रवण, रेवती, बृहस्पति, शुक्रवार को कनछेदन काराना श्रेष्ठ है, प्रातःकाल पवित्र जलसे स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र पहराकर बालकको यज्ञ स्थलमें ले आवे, और पीछे पूजन हवनादि कृत्य समाप्त होनेपर अच्छे ज्ञाता वैद्यादि चतुर पुरुष द्वारा नाड़ी बचाकर कान या नाक को छिदावे, पहिले दाहिना और फिर बांयां कान छेदन कराना चाहिये, इस कर्म में ब्राह्मण भोजन भी उचित है, यह परमसुख और सौभाग्य करता है, इसमें समय का उल्लंघन करने से बालक में बहिरापनआदि दोष उत्पन्नहोते हैं

यज्ञोपवीत संस्कार ॥ १० ॥

यह यज्ञोपवीत संस्कार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीन जातियों में अवश्य होना चाहिये, ५वें या आठवें वर्ष में ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय का, और बारहवें वर्ष में वैश्यका यज्ञोपवीत होना चाहिये, यदि इतने समयतक न होसके तो दूने २ समय तक होसकता है यदि वह समयभी बीच जाय तो फिर व्रात्य अर्थात् पतित होजाते हैं, और फिर व्रात्यस्तोम करके यज्ञोपवीत करना होता है । इसप्रकार द्विजातिमात्रों का यह परमकर्तव्य है, इस नकृत्यको करने से बहुतसी जातियें शूद्रवत् होगई हैं इसलिये तीनों वर्णों को यज्ञोपवीत संस्कार अवश्य करना चाहिये, हां शूद्रका यज्ञो-

पवीत किसीप्रकारसे नहीं होता, उच्चजातियोंमें यज्ञोपवीत का गौरव कम मानने लगे हैं, यहांतक कि यह संस्कार पृथक् न करके विवाहके समय करदेते हैं, इसमें विद्या और बुद्धिकी बड़ी हानि होती है इससे यज्ञोपवीत संस्कार यथासमय में अवश्य होना चाहिये।

वेदारम्भ संस्कार ॥ ११ ॥

शुभमुहूर्तमें बालकका पिता वा माता स्नानादिसे निवृत्त होकर बालक को लेकर मंडपमें आवै और मातृका पूजनादिके उपरान्त वेदारम्भके निमित्त गायत्रीका उपदेश कराकर वेदारम्भ करावै यह गुरुके आश्रम में भी होता है।

केशान्त संस्कार ॥ १२ ॥

चार तीन दो अथवा एक वेद समाप्त होजानेपर समावर्तन से पहले केशान्त संस्कार होता है।

समावर्तन संस्कार ॥ १३ ॥

समावर्तन संस्कार तेरहवां होता है, ब्रह्मचारी गुरुके यहां वेद शास्त्रको समाप्त कर जब अपने घरको लौटता है उस समय के कृत्यका नाम समावर्तन संस्कार है।

विवाह संस्कार ॥ १४ ॥

चौदहवां विवाह संस्कार है यह सवर्णका सवर्णा के साथ होता है, ब्राह्मण का ब्राह्मणीके साथ क्षत्रियका क्षत्रियाके साथ वैश्यका वैश्याके साथ और शूद्रका शूद्राके साथ होना चाहिये जो कन्या माताके पिण्डकी नहो पिताके गोत्रकी नहो वह द्विजातियों को विवाहमें लेनी चाहिये जैसा मनुजी कहते हैं।

असपिण्डा च यामातुरसगोत्रा च या पितुः ।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्माणि मैथुने ॥मनु०

मनुजीने ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पिशाच ऐसे आठ प्रकारके विवाह लिखे हैं ।

१ ब्राह्मविवाह वह है जिसमें वरको बुलाकर वस्त्रालंकार से भूषित करके कन्याको समर्पण कर दिया जाय यह सर्वश्रेष्ठहै

आरम्भ किये हुए यज्ञमें भलीप्रकार शास्त्रमें कहे कर्म करते हुए ऋत्विज को वस्त्र और आभूषणोंसे शोभित करके कन्यादान करने का नाम दैव विवाह है ।

एक गौ वा एक बैल वा दो गौ दो बैल यज्ञादि रूप विवाह के धर्मके निमित्त वरसे लेकर जो विधिपूर्वक कन्याका दान करनाहै वह आर्षविवाह है यह शुल्क न समझना केवल कन्या के लिये द्रव्य उपार्जन के निमित्त है ।

तुम दोनों मिलकर धर्म करो इसप्रकार वाणी से कहकर कन्या और वरका वस्त्रादि से सत्कार करके जो कन्यादान करना है यह प्राजापत्य विवा है।

कन्याकी जातिके मनुष्यों को तथा कन्याके निमित्त अपनी शक्तिके अनुसार धनादि देकर जो अपनी इच्छासे कन्या का स्वीकार करना है यह आसुरी विवाह है ।

कन्या और वरके परस्पर प्रेमसे जो संयोग है, मैथुनके निमित्त हितकारी और कामनासे उत्पन्न उस विवाहको गान्धर्व कहते हैं ।

कन्याके पक्ष वालोंको मारकर और उनके अंगोंको छेदन भेदन परकोटे आदिको तोड़कर हा भ्रातः हा पितः इसप्रकार

कहती और रोतीहुई कन्याको बलपूर्वक जो हरण करता है वह राक्षसविवाह कहाता है।

सोती हुई जो मदके कारण विह्वल हुई शील स्वभाव से हीन कन्याके संग एकान्तमें मैथुन करना यह आठ विवाहोंके मध्य में पापी और अधम पिशाचविवाह कहा है।

इनमें चार विवाहों की सन्तान दीर्घजीवी कुल की तारने वाली तथा तेजस्वी होती है, शेष चार पिछलों की सन्तान वैसी नहीं होती ॥

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्।
आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः॥
यज्ञेतु वितते सम्यगृत्विजे कर्मकुर्वते।
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्मं प्रचक्षते॥
एकं गोमिथुनं द्वेवा वरादादाय धर्मतः।
कन्याप्रदानं बिधिबदार्षो धर्मः स उच्यते॥
सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च।
कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिःस्मृतः॥
ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्वा कन्यायै चैव शक्तितः।
कन्या प्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्मउच्यते॥
इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च।
गान्धर्वः सतु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसंभवः॥
हत्वा छित्त्वा च भित्त्वा च क्रोशन्तीं रुदतीं गृहात्।
प्रसह्य कन्याहरणं राक्षसो विधिरुच्यते॥
सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहोयत्रोपगच्छति।
स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोधमः॥

इन श्लोकोंका अर्थ ऊपर लिख चुके हैं विवाह सवर्णाके साथमें होना चाहिये और द्विजातियोंमें एकवार विवाहहोजाने पर फिर विवाह स्त्रीका नहीं होता, इसकारण तीनों वर्णोंको कुलरक्षाके निमित्त सवर्णा कुलीन कन्याका पाणिग्रहण करना चाहिये, विवाह उपरान्त ही यह मनुष्य गृहस्थ होता है,गृहस्थीको अतिथिपूजन वलिवैश्वदेव सन्ध्या तीर्थदर्शन तर्पण श्राद्ध देवपूजनादि करना चाहिये ।

स्मार्ताधान संस्कार ॥ १५ ॥

इसमें श्रुति स्मृतिके अनुसार अग्निका आधान होता है यह ब्राह्मणोंका विशेष कर्तव्य है ।

श्रौताधान संस्कार ॥ १६ ॥

इसमें वेदके मन्त्रोंके अनुसार अग्निका आधान करनाहोता है, इसप्रकार १६ संस्कार शास्त्रके अनुसार लिखे गये हैं, अब हम यह देखना चाहते हैं कि घरूकाजातिमें इन संस्कारों में से क्या शेष है ।

रिवाज ।

जन्म होनेके पीछे पुरोहितको बुलाकर घड़ी लग्न नक्षत्र आदि पूछा जाता है, जन्मपत्री बनवाई जाती है उत्सव किया जाता है, तीसरे दिन स्त्री स्नान करती है,छठी तक धाय काम करती है फिर छठीका सब कृत्य होकर बारहवें दिनतक नायन काम करती है फिर नाम रखनेसे एक दिन पहले मकान बाहर भीतर लीप पोतकर शुद्ध किया जाता है और दशठौन होनेपर

बिरादरीको भोजन कराया जाता है और छोटीजातिको पुरस्कार दिया जाता है, जन्मनाम पुरोहित रखता है ।

मुंडन--पुरोहितके बतानेपर शुभदिन ठहराकर नाई बुलाया जाता है वह सब शिरके बाल उतारता है, यह बाल आटेकी लोई में रक्खे जाते हैं वह किसी तीर्थके स्थानमें डाल दिये जाते हैं इसमें भी नेगियोंको नेग देना होता है खाना पीनाभी होता है, इसके बाद कनछेदन किया जाता है ।

विवाह में भी जन्मपत्र मिल जानेपर कन्याका पिता तिलक भेजता है दोनों ओरके पंडित नेगी इसमें सम्मत होते हैं, विवाह में बरात जाती है, तीसरे दिन वापस होती है, बरात पहुँचने पर द्वारचार अथवा द्वारपूजा होती है विवाहकी सब रीति पद्धतिके अनुसार होती है, बहुतसे ढेहले भुगताये जाते हैं दूसरे दिन बढ़ार होती है, और अगले दिन न्यौतनी होती है और बेटी वालेके शिष्ट लोग जनवासे में जाते हैं, और पंडितजनोंका शास्त्रार्थ होता है उनका यथायोग्य सत्कार कियाजाता है, तीसरे दिन मढ़ा हिलाया अर्थात् गूंथ खोला जाता है इस प्रकार दुलहिनको लेकर घरलौटते हैं, पहले तीसरे पांचवें सातवें वर्षमें गौनाहोता है और कहीं२ बेटीवाला बेटीको डोलेकी रीतिसे ले जाता है पर यह रीति धीरे२ छुटती जाती है बादको सब गृहस्थियों जैसा आचार करते हैं। मृतक होनेपर दसमा तेरई आदि होता है और सपिण्डी श्राद्ध आदि सब किया जाता है गरुड़पुराण सुना जाता है पिण्डदान होता है सालभरमें वर्षी होती है सम्पन्न लोग गया में पिण्डदान करते हैं ।

शुद्धि—बिना दतौन और स्नान किये स्त्री रसोई नहीं बना सकती स्त्री या पुरुष रसोई करने के समय एक धोतीके सिवाय अन्य वस्त्र धारण नहीं कर सकते, यह धोती रोज धोई जाती है जीमनेवाले पुरुष भी रसोई जीमनेके समय कपड़े उतार केवल धोती पहर कर भोजन करते हैं, और ब्राह्मण के सिवाय अन्य जाति का कच्चा भोजन घरूका जातिमें नहीं होता, इस जाति के हाथ की बनी पक्की रसोई ब्राह्मण क्षत्रियादि खाते हैं।

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध होता है कि निश्चय ही घरूका जाति क्षत्रियवंश है, शास्त्र पुराण स्मृति के प्रमाण हम इस विषयमें लिख चुके अब रिवाजमें जो संस्कार हैं उनको भी लिखकर सर्वसाधारणके सामने उपस्थित कर दिया इससे भी यह संस्कार शास्त्र के बहुत कुछ मिलते दिखाई देते हैं हम विद्वानोंपर अब इस विषयको छोड़ते हैं यदि पक्षपात रहित होकर महात्मा लोग इसको विचारेंगे तो हमारे इस लेखमें उनको कोई शंका न रहेगी और परिश्रम तथा प्रमाणको देखकर घरूकाजातिके क्षत्रियत्व प्रकाश करनेमें शंका न करेंगे।

यद्यपि इससमय लोग जातिके विषयोंमें बड़ा आन्दोलन कर रहे हैं कोई ब्राह्मण कोई क्षत्रियादि होनेका दावा कररहे हैं और तरह२की बातें करते हैं पर प्रमाण या शास्त्रकी ओर देखो तो उनमें कुछभी सार नहीं है हमारी यह इच्छा नहीं कि हम मिथ्या ही कोई आडम्बर खड़ा करके किसी जातिको

परिवर्तन करदें परहां जो सत्य ही कोई उच्चजाति भूली भटकी अपने उच्चपनको खोरही है उसको उसका असली घर बतादेना सत्पुरुषोंका काम है, यद्यपि गुण दोष इससमय बहुधा सभी में सन्निविष्ट होरहे हैं, एकपात्र विद्वान् ब्राह्मणोंको छोड़कर शेष सभी जाति अपने नित्यकर्म और शास्त्र अनुष्ठानसे पराङ्मुख होरहे हैं, और तीन दोकालकी बात कौन कहै एक कालकी सन्ध्या करना भी भार समझते हैं, कि जब संध्या हुई और उठनेको जी चाहा तो कहदिया कि हमको संध्या करनी है बहुत थोड़े सज्जन हैं जो यथार्थमें भगवदुपासना करते हैं बस नाममात्र ही शेष रहगया है, इसलिये जो कर्म धर्मपर आरूढ होना चाहते हैं और वास्तवमें उसके अधिकारी हैं उनके लिये संकोच करनेका समय नहीं है और जिनके लिये शास्त्रका अनुसरण करके चलनेके लिये इच्छा है वे इससमय शीघ्र अपनी असलियतको प्राप्तकर सकते हैं इसीसे हमने बाबू रघुबीरशरण सेनजी महोदय तथा बाबू चन्द्रपालसेनजी महोदय की इच्छासे बहुतसे ग्रन्थोंकी खोज करके यह "घरूका क्षत्रिय जातिनिर्णयग्रन्थ" सप्रमाण तैयार किया है पंडितजन इसको अवलोकन कर हमारे परिश्रमको सफल करें, और इसमें अपनी अनुमति प्रदान करें।

अब हमको केवल बंशावलीके कुछ नाम लिखने बाकी हैं जो हमको मिले हैं, उनको लिखकर हम इस ग्रन्थको समाप्त करते हैं।

वंशवृक्ष।

- पाण्डु
  - युधिष्ठिर
  - भीम
    - घटोत्कच
      - अंजनपर्वा
        - मेघवाहन
          - नरवाहन
      - बर्बरीक अथवा सिद्धसेन
        - अधिसेन
          - विलावलसेन
            - केशवसेन
              - माधवसेन
                - मयूरसेन
                  - भीमसेन
                    - कल्याणसेन
                      - हरीसेन
                        - क्षेमसेन
                          - नारायणसेन
                            - लक्ष्मीसेन
                              - दामोदरसेन
  - अर्जुन
  - नकुल
  - सहदेव

महाभारतका संक्षेप वृत्तान्त।

राजर्षि पांडुकी मृत्युके उपरान्त युधिष्ठिरादि पाँचों पांडव वनवासको छोड़ अपने गृहमें आकर शीघ्रही वेद और धनुर्विद्या में चतुर हुए, नगरनिवासी उनके इस प्रभावको देखकर अत्यन्त प्रीतिकरने लगे, इसकारण कौरवकुल असूयाके वश होकर महाबल, सौबल, कर्ण, और दुर्मति दुर्योधन यह सब मिलकर पांडवोंके निग्रह की चेष्टा करने लगे। एक समय भीमसेनको विषका मिला हुआ अन्न भोजन कराया, परन्तु वह जीर्ण होगया, और सोते हुए भीमसेनके हाथ पैर बांधकर जलमें डालदिया, भीम बंधनोंको काट कर निकल आये। फिर सोते हुए भीमको काले सांपसे डसवाया, परन्तु उससे भी उनके प्राण न गये। इसप्रकार पांडवों पर अनेकप्रकारके अत्याचार किये गये, विदुर सदा पांडवों की सहायता करते रहे, किसी भांतिभी पांडुपुत्रोंका नाश नहुआ। तब धृतराष्ट्रकी आज्ञानुसार वारणावत नगरमें लाखका घर बनवाकर उनको उस गृहमें भेजा। परन्तु विदुरके उपदेश से सुरंग लगाकर लाक्षागृह में आग लगाय पुरोचनको भस्म करके रात्रिके समय बाहर जाय माताके साथ पांडव वनको चले गये। मार्गमें विकट आकृति वाले हिडिम्ब नामक राक्षस को भीमसेनने मारकर हिडिम्बा नामक उसकी बहनसे घटोत्कच नामक पुत्रको उत्पन्न किया * इसके उपरान्त ब्राह्मण वेषको धारण कर एक चक्रा नगरीमें वक नामक राक्षसको मार

* इसी महात्माके कुलकी यह वंशावली है

कर ग्रामवासियोंको वहां सुखीकर आपभी वहीं रहने लगे इसके उपरान्त द्रौपदीके स्वयम्वर में जाय द्रौपदीको पाकर एक वर्ष वहां रहकर हस्तिनापुरको आये, तब धृतराष्ट्रने कहा कि तुमलोगों के परस्परमें विग्रह होने की संभावना है। इस कारण तुम थोड़ेसे ग्राम लेकर खांडवप्रस्थमें जाकर रहो युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन नकुल, सहदेव खांडवप्रस्थ में गये, और अनेक राजाओंको अपने वाहुवल से परास्त करके एक वर्ष तक वहां निवास कर धर्मपरायण पांडवगण शत्रुओंका दमन करके धीरे २ उदय होने लगे, पूर्वदिशाकी ओर भीम, उत्तरमें अर्ज्जुन, पश्चिम में नकुल, दक्षिणमें सहदेवने विजय करके इस ससागरा पृथ्वीमंडल में अपना अधिकार स्थापित किया। सूर्य और सूर्यकी समान पांचों पांडवोंसे पृथ्वी-मंडल मानों छै सूर्यकी समान प्रकाशमान हुआ।

एक समय राजा युधिष्ठिरने किसी विशेष कारण के वशी-भूत होकर अपने प्राणप्यारे भाई अर्ज्जुनको बनवासदिया। अर्ज्जुन बन में तेरह महीने रहा, पीछे श्रीकृष्ण से भेंटकर सुभद्राका पाणिग्रहण करके कृष्ण के साथ खांडव वन दाह और अग्निको तृप्त करके गाण्डीव धनुष और कपि--ध्वजरथ को प्राप्त किया और मय दानवका उस अग्नि से उद्धारकिया इसकारण उससे मणि-कांचन-मंडित एक सभा निर्माण कराई और राजसूययज्ञका अनुष्ठान किया।दुष्टात्मा दुर्योधनने उस सभाके लोभसे शकुनि के कहने के अनुसार कपटपाशकी क्रीड़ा करके युधिष्ठिरको परास्तकर बनवास दिया। इसके उपरान्त बारहवर्ष बनमें रहकर और एक वर्ष अज्ञातबासके

अतिरिक्त अपने राज्य में आकर अपनी धन सम्पत्ति मांगी, और जब वह न मिली तो घोर समरानल प्रज्वलित हुई, उसमें महात्मा भीष्मने १० दिन, द्रोणाचार्यने ५ दिन, कर्ण ने दो दिन और शल्यने आधे दिन युद्ध किया था। इसके उपरान्त भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध में आधेदिन और रात्रि समय अश्वत्थामा, कृतबर्मा व कृपाचार्य ने एकमत होकर सुख से सोई हुई युधिष्ठिर की सेना का संहार किया था। अन्तमें पांडवों ने दुर्योधनका प्राणनाशकर फिर अपनी राज सम्पत्ति ले ली इस युद्ध में अठारह अक्षौहिणी सेनाका नाश हुआथा २१८७० रथ २१८७० गज १०९३५० पैदल और ६५६१० अश्वपति इतनी संख्या से एक अक्षौहिणी होतीहै। राजा पांडुके युधिष्ठिरादि पांच पुत्र, धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि सौ पुत्र थे देखिये धर्म के निमित्त पाण्डुपुत्रों ने कितने कष्ट सहे परन्तु दृढ़ता और धैर्य नहीं छोड़ा, जो पुरुष पुरुषार्थ और धर्म को नहीं छोड़ते उनको एक दिन अपने मनोरथ की प्राप्ति अवश्य होती है। कार्यकरो तो परमात्मा तुम्हारी सहायताकरैगा॥

श्रीगोपालाष्टकप्रारम्भः ।

बिहरत स्वच्छन्दं आनँदकन्दं श्रीव्रजचन्दं ब्रह्मपरम् ।
पूरणशशिवदनं शोभासदनंजितछविमदनं रूपवरम् ॥
हलधरवरवीरं श्यामशरीरं गुणगम्भीरं धीरधरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥ १ ॥
राजतवनमाला रूपबिशाला चालमरालासुरतहरम् ।
कुंडलधृतकरणंगिरिवरधरणं निजजनशरणं कृपाकरम् ॥

गोपनकृतसंगं ललितत्रिभंगं लजितअनंगं निरखिपरम्।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ २ ॥
जलधरवरश्यामं पूरणकामं अतिसुखधामं दुःखहरम्।
वृन्दावनक्रीडित असुरनपीडित व्रजतिय व्रीडितरसिकवरम्।
नूपुरध्वनिचरणं मुनिमनहरणं तारणतरणं तुष्टतरम्॥
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ ३ ॥
राधाउरहारं रूपअपारं नीरविहारं चीर-हरम्।
कुंचितवरकेशं मुकुटविशेषं गोप सुवेशं निगमवरम्॥
कोमलअतिचरणं वेदाविवरणं जगदुद्धरणं मृदुलतरम्।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ ४ ॥
अलकनमुखराजतमन्मथ लाजत किंकाणिबाजतमधुरस्वरम्।
बंशीकृतनादं हरताविषादं युगवरपादं तिमिरहरम्॥
भक्तन आधीनं चरित नवीनं परमप्रवीणम् प्रेमपरम्।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ ५ ॥
अतिनृत्यप्रवीरे धीरसमीरे यमुनातीरे रासकरम्।
कलगानअनूपं श्यामस्वरूपं त्रिभुवनभूपंमोदभरम्॥
राधागुणगायक व्रजसुखदायक सुरवरनायकवेणुधरम्।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ ६ ॥
सुन्दरमृदुहासं बिपिनाबिलासं कुंजनिवासंकेलिकरम्।
युवतीदृगअंजनजनमनरंजन केशीभञ्जनभारहरम्॥
भूषणानिजभवनंगजगतिगमनं कालीदमनंनृत्यकरम्।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम्॥ ७ ॥
गोरजमुखशोभित सुरनरलोभितमन्मथक्षोभितदृश्यपरम्।
गोपनसहभुञ्जे बिपिननिकुञ्जे बत्सन पुञ्जे द्रुहिणहरम्॥

यह छवितारायण लखिनारायण भये पारायण अखिलनरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥

दोहा ।

बहुतगई थोरी रही नारायण अब चेत ।
काल चिरैयां चुगरहीं निसदिन आयू खेत ॥ १ ॥
नारायण सुख भोगमें तू लपटत दिन रैन ।
अन्तसमय आयो निकट देख खोलके नैन ॥ २ ॥
धन यौवन यों जायगो जाविधि उड़त कपूर ।
नारायण गोपालभजि क्यों चाटै जगधूर ॥ ३ ॥
नारायण संसारमें भूपति भये अनेक ।
मैं मेरी करते रहे ले न गये तृण एक ॥ ४ ॥
हाथ जोरि ठाढ़्यो रह्यो जिनके सन्मुख काल।
नारायण सोऊ वली परे कालके गाल ॥ ५ ॥
नारायण जिनके भवन विधिसम भोग विलास।
अन्तसमय सब छांडिकै भये कालके ग्रास ॥ ६ ॥
रे मन क्यों भटकत फिरै भज श्रीनन्दकुमार ।
नारायण अजहू समझ भयो न कछू बिगार ॥ ७ ॥
तेरे भावैं कछु करो भलो बुरो संसार ।
नारायण तू बैठकर अपनो भवन बुहार ॥ ८ ॥
नारायण सत्संग कर सीख भजनकी रीति ।
काम क्रोध मद लोभमें गई आरवल वीति ॥ ९ ॥
धन विद्या गुण और वल यह न बड़प्पन देत ।
नारायण सोई बड़ो जाको हरिसों हेत ॥ १० ॥
निज स्वारथके मित्र सब यही जगतकी चाल।

नारायण बिन स्वारथी हितू नन्दकोलाल ॥ ११ ॥
नारायण हरिभजन में तू जिन देर लगाय ।
कोजानै या देरमें श्वास रहै कै जाय ॥ १२ ॥
नारायण जब अंतमें जम पकरैंगे बाँह ।
तिनसों भी कहियो हमैं अभी सो फतो नाँह ॥ १३ ॥
नारायण निज हिये में अपने दोष विचार ।
ता पीछे तू औरके औगुण भले निहार ॥ १४ ॥
नारायण मैं सत्यकहुं भुज उठायकै आज ।
जो जिय बने गरीबतू मिलैं गरीबानिवाज ॥ १५ ॥
तनक मान मनमें नहीं सबसों राखत प्यार।
नारायण ता सन्तपै बार २ बलिहार ॥ १६ ॥

विनयके पद।

प्रभु हों सब पतितनको टीको ॥
और पतित सब दिवस चारके हौंतो जन्मत हीको ।
बधिक अजामिल गनका तारी और पूतना हीको ॥
कोउ न समरथ अघ करिबेको खैंचि कहत हौं लीको ।
मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ १ ॥
जेहि तन ना हरिभजन कियो ॥
सो तनु शूकर श्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ।
जो जगदीश ईश सबहिनको ताहिन चित्त दियो ॥
प्रगट जान यदुनाथ विसार्‌यो आशा मद्य पियो ।
चार पदारथके प्रभुदाता, तिन्हे न मिल्यो हियो ।
सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ २ ॥

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ॥
तादिन तेरे तनु तरवरके सबै पात झरि जैहैं ॥
घरके कहैं वेगही काढ़ो भूत भये कोउ खैहैं ।
जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैं हैं ॥
कहँ वह ताल कहां वह शोभा देखत धूर उड़ै हैं ।
भाइ बंधु और कुटुमकवीला सुमरि सुमरि पछितै हैं ॥
बिनागुपाल कोउ नहिं आपना यश कीरति रहि जैहैं ।
सोतो सूर कठिन देवनको सतसंगतिमें पैहैं ॥ ३ ॥
राम नाम इकसार और सब झूँठा है संसारा ।
रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहि अधिक पियारा ॥
भाइ बंधु और लोक कुटुम सब मातपिता सुतदारा ।
अन्तसमय कोइ काम न आवत देखो दृष्टि पसारा ॥
यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न बारंबारा ।
ताको पाय वृथा क्यों खोवत भजत न एकोवारा ॥
जगतसिंधुमें आन फंस्यो है उठत भँवर भ्रमभारा ।
युगल चरणकी नौका कीजे उतर जाय भव पारा ॥ ४ ॥



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत रामायणकी-

॥ शतपंचचौपाई ॥

दोहा ।

नील सरोरुह नीलमणि, नील नीरधर श्याम ।
लाजहिं तन शोभा निरखि, कोटि २ शतकाम ॥ १ ॥

चौपाई ॥

शरद मयंक वदन छविसींवाँ । चारु कपोल चिबुकदरग्रीवाँ ॥
अधर अरुण रद सुन्दर नाशा । विधुकरनिकर बिनिंदकहासा॥

नवअंवुज अंबुक छबि नीकी ।चितवनिललितभावतीजीकी॥
भृकुटि मनोज चापछविहारी । तिलकललाटपटलद्युतिकारी॥
कुंडल मकरमुकुट शिरभ्राजा । कुटिलकेश जनुमधुपसमाजा॥
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला । पदिकहार भूषण मणिजाला॥
केहरि कन्धर चारु जनेऊ । बाहु बिभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकर सरिस सुभग भुजदंडा । कटिनिषङ्ग करशर कोदंडा ॥

दो०—तड़ित बिर्निंदक पीतपट, उदर रेख बरतीनि ।
नाभि मनोहर लेतिजनु, यमुनभँवर छबिछीन ॥ २ ॥

चौपाई।

पद राजीव बरनि नहिं जाहीं । मुनिमन मधुपबसहिंजेहिमाहीं
बामभाग शोभित अनुकूला ।आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला॥
श्यामगौर सुन्दर दोउ जोरी । निरखहिंछबिजननीतृणतोरी॥
हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकाशा । सूचित किरन मनोहर हासा॥
काम कोटि छवि श्याम शरीरा । नील कंज वारिद गम्भीरा ॥
अरुण चरण पङ्कजनख ज्योती । कमलदलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं । नूपुरधुनिसुनि मुनिमनमोहैं॥
कटिकिंकिणी उदर त्रयरेखा । नाभि गँभीर जान जेहिदेखा॥
भुज विशाल भूषणयुत भूरी । हियहरिनख शोभाअति रूरी ॥
उरमणिमाल पदिककी शोभा । विप्रचरण देखत मन लोभा ॥

शोभासींव सुभग दोउ बीरा । नीलपीत जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके । गुच्छाबिच २ कुसुमकली के ॥
भालतिलक श्रमबिन्दु सुहाये । श्रवण सुभगभूषणछबिछाये ॥
विकटभ्रुकुटि कच घूँघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला । हास बिलासलेत मनमोला ॥
मुखछबिकहिनजात मोहिं पाहीं । जोबिलोकिबहुकामलजाहीं ॥
उरमणि माल कम्बुकलग्रीवा । कामकलभकरभुजबलसीवा ॥
सुमन समेत बाम कर दोना । साँवरकुँवर सखी सुठिलोना ॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटिकामउपमा लघु सोऊ ॥
शरद चंद निंदक मुख नीके । नीरज नयन भावते जीके ॥
चितवनिचारु मारमद हरनी । भावतिहृदयजायनहिंवरनी ॥
कलकपोलश्रुतिकुण्डललोला ।चिबुकअधर सुन्दर मृदुबोला ॥
कुमुदबन्धु कर निन्दकहासा । भ्रकुटी बिकट मनोहरनासा ॥
भालबिशालतिलकभलकाहीं।कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं॥
पीत चौतनी शिरनसुहाई । कुसुमकली बिच बीचबनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवाँ । जनु त्रिभुवन सुखमाकीसींवाँ॥

दो०-कुंजरमणिकण्ठा कलित, उर तुलसीकी माल ।
वृषभकन्ध केहरि ठवनि, बलनिधि बाहु बिशाल ॥४॥

चौपाई ।

कटि तूणीर पीतपट बांधे । करशर धनुष बाम बर कांधे ॥
पीतयज्ञ उपवीत सुहाई । नखशिख मंजुमहाछविछाई ॥

श्यामल गौर धरे धनु हाथा। वयकिशोरकौशिकमुनिसाथा ॥
केकिकंठ द्युति श्यामलअङ्गा। तड़ित बिनिंदक बसनसुरङ्गा ॥
ब्याह बिभूषण विविधबनाये । मङ्गलमय सबभाँति सुहाये ॥
शरदबिमलबिधुबदनसुहावन । नयननवल राजीव लजावन॥
श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटिमनोजलजावन ॥
जावक युत पदकमलसुहाये । मुनिमनमधुपरहहिंजहँछाये॥
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरतबालरविदामिनिज्योती॥
कलकिंकिणि कटिसूत्रमनोहर । बाहु बिशाल विभूषणसुन्दर ॥
पीत जनेउ महा छबि देई । कर मुद्रिका चोरि चित लेई ॥
सोहत व्याह साज सबसाजे । उर आयत अतिभूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती । दुहुँआंचरन लगे मणिमोती ॥
नयनकमल कलकुण्डलकाना । वदन सकलसौंदर्य निधाना ॥
सुन्दर भ्रुकुटि मनोहर नासा । भालतिलकरुचिरतानिवासा॥
सोहत मौर मनोहर माथे । मङ्गलमय मुक्तामणि गाथे ॥
तरुण तमाल वरण तनुसोहा । देखत कोटि मदन मनमोहा॥
मुनि पट कटिनकसे तूणीरा । सोहहिं करकमलन धनुतीरा॥
शीश जटा कटि मुनिपटबांधे । तूणकसे कर शर धनु कांधे ॥
बल्कलबसनजटिलतनुश्यामा । जनुमुनि वेष कीन रतिकामा॥
कर कमलन धनुशायक फेरत । जियकी जरनि हरतहँसिहेरत॥
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥
अरुण नयन राजीव सुवेषं । सीता नयन चकोर निशेषं ॥

हरहृद मानस राज मरालं । नौमि राम उरबाहु विशालं ॥
सरासिज लोचन बाहु विशाला । जटामुकुटाशिर उर वनमाला॥
श्यामगात शिरजटा बनाये । अरुण नयन शरचाप चढ़ाये॥
श्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभुभुज करिकरसमदशकंधर॥
भुजप्रलम्ब कंजारुण लोचन । श्यामलगातप्रणतभयमोचन॥
सिंह कन्ध आयत उरसोहा । आननअमितमदनमनमोहा॥
नील कंज तनु सुंदर श्यामा । हृदयराखिलोचनअभिरामा॥
श्यामगात सरसीरुह-लोचन । देखौं जाय ताप-त्रयमोचन ॥

छन्द ।

संग्रामभूमि विराज रघुपति अतुल बल शोभा घनी।
श्रमविंदु मुख राजीवलोचन रुचिर तनु शोणित कनी ॥
भुजयुगल फेरत शरशरासन भालुकपि चहुँदिशि बने।
कह दास तुलसी कहि न सक छवि शेष जेहि आनन घने ॥

चौपाई ।

जटाजूट बाँधेउ दृढ़ माथे । सोहहिं सुमन बीचबिचगाथे॥
अरुण नयन बारिद तनु श्यामा । अखिललोकलोचनअभिरामा
कटितट परिकर कसेउ निषंगा । करकोदंड कठिन सारंगा ॥

छन्द ।

सारंग कर सुन्दर निषंग शिलीमुखा करकटि कस्यो ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरा सुरपद लस्यो ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे ।
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥२॥
शिर जटाजूट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नील गिरिपर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं ॥
भुजदण्ड शर कोदंड फेरत रुधिरकण चहुँदिशि बने ।
जनु राय मुनी तमालपर बैठी अमित सुख आपने ॥ ३ ॥

चौपाई ।

श्यामगात राजीव विलोचन । दीनवन्धु प्रणतारत-मोचन ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े । नव राजीव नयनजल बाढ़े ॥
करि मज्जन प्रभु भूषण साजे । अंग अनंग कोटि छवि लाजे॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भवमोचन ॥
मामव लोकय पंकज लोचन । कृपाविलोकनिशोचविमोचन
नील तामरस श्यामकाम अरि । हृदयकंज मकरंद मधुपहरि॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा । अंग अंगप्रातिछवि बहुकामा॥
नव राजीव अरुण मृदु चरणा ।पदजरुचिरनखशशिद्युतिहरणा
ललित अंगकुलिशादिकचारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥
चारु पुरट मनि रचितबनाई ।कटिकिंकिणि कलमुखरसुहाई॥
दो०—रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गम्भीर ।
उर आयत भ्राजत विविध, बाल विभूषणचीर ॥५॥

चौपाई।

बालकंध केहरि दर ग्रीवाँ। चारुचिबुक आनन छविसीवाँ॥
कलबल वचन अधर अरुणारे। दुइ दुइ दशन विशद बरबारे॥
ललित कपोल मनोहर नासा। सकलसुखदशशिकरसमहासा॥
नीलकंज लोचन भवमोचन। भ्राजत भाल तिलक गौरोचन॥
बिकटभ्रुकुटिसमश्रवणसुहाये। कुंचित कच मेचक छविछाये॥
अरुणपाणि नख करजमनोहर। वाहु बिशाल बिभूषण सुंदर॥
पीत भीन भंगुलि तनु सोही। किलकनिचितवनिभावतिमोही
जानुपाणि धाये मोहि धरना। श्यामलगातअरुणमृदुचरना॥

छन्द।

शतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जेनर उर धरैं।
दारुण अविद्या पंच जनित विकार श्रीरघुपति हरैं॥

इति समासम् शुभम्.

शुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
म	मे	ख	२०
सोरह	सोरहे	४	२३
लग	लगे	१२	११
पतिभार्यां	पतिर्भार्यां	१६	१२
कते	करते	२७	१९
करने	नकरने	२९	२३
विवा	विवाह	३१	१६



॥ श्रीः ॥

जोतभास्कर

भाषाटीका सम्मिलित जिसे

यजुर्वेदभाषाभाष्यकार अनेक ग्रन्थों के अनुवादक

तथा निर्माता मुरादाबाद निवासी विद्यावारिधि स्वा-

गोपि पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र ने निर्मित किया जिस

में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, और मिश्र खण्ड हैं उसी को

खेमराज श्रीकृष्णदास ने निज श्रीवेङ्कटेश्वर॥

स्टीम मुद्रणालय बम्बई में मुद्रित कर

प्रकाशित किया संवत १९७४, शके १८३९

एक वंश जिसको घटोत्कच (घरुक) वंश कहते है
यह भीमसेन के पुत्र घटोत्कच से चला है विजय
मुक्तावली में घटोत्कच का नाम घटोकाल रखा है
यथा, रहत किते दिन जब भयो ता कानन के धाम
पुत्र हिडिम्बा के भयो धरयो घरो का नाम
इस घटोत्कच वंश को भीमसेन के द्वारा होने से
क्षत्रियत्व कहा गया है स्कन्द पुराण के माहेश्वर
खण्ड के अध्याय साठ में घटोत्कच ने श्रीकृष्ण
से अपने वर्णाश्रम के विषय मे पूछा तब श्री
कृष्ण ने उत्तर दिया कि ।।

तद्भवान क्षत्रियकुले जातोऽसि कुरु तच्छृणु ।।

बलं साधय पूर्वं त्वमतुलं तेन शिक्षय ।। २३ ।।

तद्भवान्बल प्राप्त्यर्थं देव्याराधन माचर ।। २४ ।।

नमस्कारेण मंत्रेण पंच यज्ञान्न हापयेत ।। २५ ।।

हे कुरु तुम क्षत्रिय कुल मे उत्पन्न होये हो

इससे तुम पहले बल को साधना करो देवी को आराध-
ना करो नमस्कार मंत्र से, यथा पुष्पं समर्पयामि
नमः पढ़कर पूजा किया करो और पंच यज्ञ को
किसी प्रकार न त्याग करो, इसने देवी का आ-
राधन किया, इसका पुत्र अनजन्नपवो हुआ,
जैसा भारत मे लिखा है ।।

घटोत्कच सुतः श्री, मान्भिल्लार्जुन धर्योपमः
बर्बरीकोर्जुन पर्वास द्भवंशेन भस्तल्नात ।।

।। इस वंश वालों के नामान्त सेन शब्द रहता है ।।

।। [illegible] ।।

पुस्तक मिलनेका पता—

बाबू रघुवीरशरणसेन

बंगालसर्वे आफ़िस

हज़ारीबाग़ (छोटा नागपुर)

नं॰१ मंत्र

यह वर लेकर वर्वरीक आनन्दको प्राप्त हुआ। स्कन्दपुराणके अन्तर्गत इस कथासे यह स्पष्ट विदित होता है कि भगवान् कृष्णने घटोत्कचके पुत्रको क्षत्रिय स्पष्ट कहा है, और यहां देवीने तथा देवताओंने उसका नाम सिद्धसेन कहा है, और स्वयं वर्वरीकने अपनेको कुरुकुलमें उत्पन्न माना है, तब अब इन ग्रन्थोंके अनुसार घरूकावंशके क्षत्रिय होने तथा कुरुवंशमें होने का कोई सन्देह नहीं रहा, यह वही वर्वरीक है जिसका शिर श्रीकृष्णने भारतमें काटाथा और उसका शिर लकड़ीपर स्थापन किया और उसने समस्त युद्ध अवलोकन किया और अन्तमें यह स्मरण करने से दुःख दूर करनेवाला हुआ। घरूकाजातिके कल्याण के लिये—हम स्कन्दपुराणसे इनका मंत्र लिखते हैं।

जय जय चतुर शीति कोटि परिवार सूर्यवर्चाभिधान यक्षराज जय भूभारहरणप्रवृत्त लघुशाप प्राप्त नैर्ऋतियोनि-संभव जय कामकटंकटाकुक्षिराजहंस जय घटोत्कचानंद वर्द्धन वर्वरीकाभिधान जय कृष्णोपदिष्ट श्रीगुप्तक्षेत्र देवी-समाराधन प्राप्तातुलवीर्य जय विजय-सिद्धिदायक जय पिंगलारेपलेन्द्र दुह द्रुहा नव कोटीश्वर पलाशन दावा-नल जय भूपातालान्तराले नागकन्यापरिहारक जय भीममानमर्दन जय सकलकौरवसेनावधमुहूर्तप्रवृत्त जय श्रीकृष्णवरलब्ध सर्ववरप्रदान सामर्थ्य जय जय कलिकाल वंदित नमोनमस्ते पाहि पाहीति।

इसके पाठसे वर्वरीक प्रसन्न होते और सब विघ्न दूर होते हैं, महाभारत के द्रोणपर्वमें घटोत्कच का एक पुत्र अंजन पर्वा लिखा है, इससे और वर्वरीक से इस कुलकी प्रतिष्ठा हुई है।